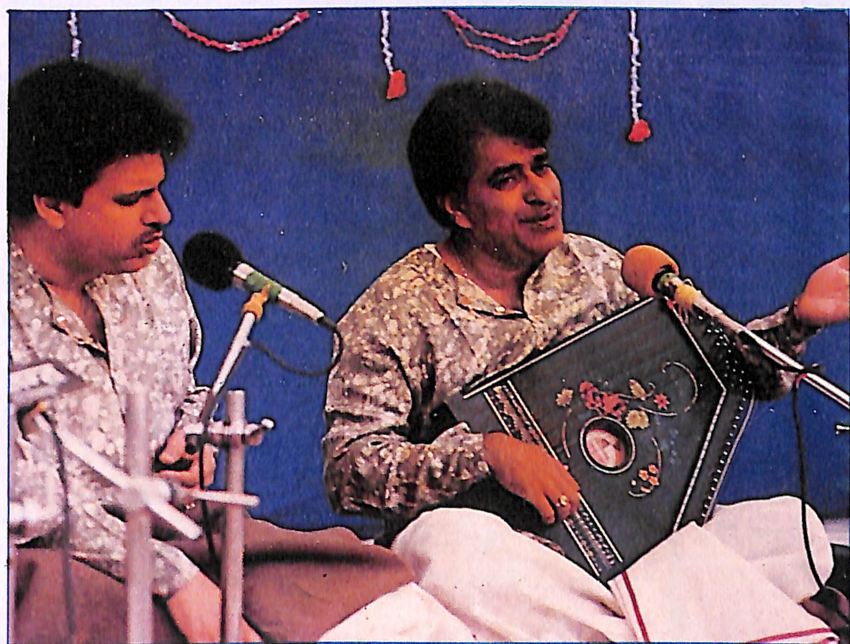


Sri Rajan Misra & Sri Sajan Misra



*Rajan & Sajan Misra brothers ,
Vocal Jugalbandi, Khayal, Bhajan (Varanasi)*

श्री राजन मिश्र
एवं
श्री साजन मिश्र

Sri RAJAN MISRA & Sri SAJAN MISRA
(“MISRA BANDHU”)
Vocal Jugalbandi Khayal & Bhajan

RAJAN who is in his early forties, and his younger brother SAJAN who is in his late thirties shot into limelight as the most outstanding Khayal Jugalbandi (duet singing) pair of Hindustani music nearly two decades ago. Rajan is a Post Graduate Degree-holder in Sociology and Sajan is a Graduate from the Benares Hindu University. This popular team has performed in innumerable Conferences, Festivals, National Programmes of AIR and Doordarshan; and have been invited abroad, specially to U.S.A for extensive performing tours repeatedly. Well-educated and widely travelled, they have been honoured with many titles like ``*Sangeet Nayak*`, ``*Sangeet Ratna*`, and *Sangeet Bhushan*`, and with prestigious Awards like the Sanskriti Award from the late Prime Minister Smt Indira Gandhi, the U.P. Sangeet Natak Academy Award etc. Belonging to a long line of renowned musicians in Varanasi (Benares) such as Pdt Ganeshiji Misra (great grandfather), Pdt Bade Ramdasji (grandfather), Pdt Hanuman Misra (father), Pdt Gopal Misra, the Sarangi maestro (uncle), and Pdt Sursahai Misra, RAJAN-SAJAN have not only imbibed the traditions of the famous ``Benares Gharana" of Bade Ramdasji, but added to the beauty and richness of the inherited style by their own unremitting ``*Sadhana*`, deep thinking, aesthetic approach and dedication. Music, to them is ``an unending soul-sublimating *sadhana*" that gives them moments of pure ``*ananda*" (bliss). Holding their musical heritage as something sacred, they bring a mood of sublime devotion into their music and have thereby achieved wide popularity.

While Rajan impresses with his voice-control, ``*taiyari*" (speed and technical mastery) eloquent gestures, and the deep feeling he pours into his singing, Sajan offers a perfect foil

through his rich sonorous and widely-ranged voice, and shooting taans covering three octaves right from the lowest ``*mandra*'' notes to the high ``*taar*'' notes.

RAJAN-SAJAN brothers have a rich repertoire of ragas, slow and fast khayals, Tappas, bhajans, and many new ``*bandishes*'' . Although they are good Thumri-singers, they never sing Thumris in their public performances. In spite of constant bookings, they are also giving training to some disciples. They have also done playback-singing for the film ``*Sur Sangam*'' all the songs of which are in the classical mould, but they have not accepted any more film offers as they find it very time-consuming.

Susheela Misra

Picture : Ratan Kumar

श्री राजन मिश्र एवं श्री साजन मिश्र “मिश्र बंधु”

(ख्याल और भजन के युगल गायक)

राजन मिश्र इस समय अपनी उम्र के चौथे दशक के पूर्वार्ध तथा उनके अनुज साजन मिश्र तीसरे दशक के उत्तरार्ध में हैं। लगभग बीस वर्ष पूर्व हिन्दुस्तानी संगीत के आकाश में ख्याल जुगलबन्दी के ये उत्कृष्ट गायक दीप्तभाव नक्षत्रों के समान सहसा उदित हुए और आज भी उत्तरोत्तर चमक रहे हैं।

राजन बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से समाज-शास्त्र में परास्नातक तथा साजन वहीं के स्नातक हैं। ये लोकप्रिय युगल गायक अब तक असंख्य संगीत सभाओं, उत्सवों, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के अनेक राष्ट्रीय कार्यक्रमों में अपना गायन प्रस्तुत कर चुके हैं। इन्हें विदेशों में भी, विशेष कर संयुक्त राष्ट्र अमरीका में व्यापक स्तर पर अपना संगीत कार्यक्रम पेश करने के लिए बार-बार आमंत्रित किया गया है। सुशिक्षित एवं बहुभ्रमणशील इन कलाकार बंधुओं को ‘संगीत-नायक’, ‘संगीत-रत्न’ और संगीत-भूषण’ आदि उपाधियों से अलंकृत किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठित पुरस्कार भी इन्हें प्रदान किये गये हैं जैसे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा प्रदत्त ‘संस्कृति’ पुरस्कार एवं उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी एवार्ड आदि।

वाराणसी के विख्यात संगीत घराने और उसकी सुदीर्घ परम्पराओं से इन बंधुओं का निकट का नाता है- ये उसी संगीत घराने के वंशज हैं। पंडित गणेशी जी मिश्र इनके प्रपितामह थे, पंडित बड़े रामदास जी पितामह थे पंडित सुरसहाय मिश्रा आदि। तथा पंडित हनुमान मिश्र इनके पिता हैं। प्रसिद्ध सारंगी नवाज पंडित गोपाल मिश्र इनके चाचा थे। मूर्धन्य संगीतज्ञों के परिवार में जन्मे राजन-साजन ने बड़े रामदास जी के प्रसिद्ध घराने की परम्पराओं को न केवल आत्मसात् ही किया अपितु अपनी कठोर साधना, अपने गहन-चिन्तन, सौन्दर्य-बोध तथा सम्पूर्ण समर्पण से उन सुन्दर एवं समृद्ध परम्पराओं को और अधिक सम्पन्न बनाया। उनके लिये संगीत आत्मा के उदात्तीकरण की अनन्त साधना है-इस साधना से उन्हें परमानन्द के क्षण

उपलब्ध होते हैं। अपनी वंशानुगत संगीत विरासत को वे पवित्र मानते हैं। यही कारण है कि वे अपने गायन से उदात्त भक्ति-भाव से परिपूर्ण वातावरण की सृष्टि करते हैं।

अपनी गायकी के जिन गुणों से राजन प्रभावित करते हैं उनमें प्रमुख हैं, उनका स्वर नियंत्रण, 'तैयारी" (लय और गति पर उनका अधिकार) उनकी भावपूर्ण मुद्रायें तथा अपनी गहन भावानुभूति को अपने गायन में ढालने की उनकी अपूर्व क्षमता। इसके दूसरी ओर हैं साजन मिश्र जो अपनी सुमधुर और पाटदार आवाज़ से तथा तीनों सप्तकों में अति मन्द्र स्वर से तार स्वर तक अपनी तानों के त्वरित आरोह से अपने अग्रज के गायन प्रभाव को उभार देते हैं।

राजन-साजन बंधुओं के पास रागों का भरपूर खजाना है। विलम्बित तथा द्रुत ख्याल, टप्पा, भजन के अतिरिक्त अनेकों बंदिशें उनकी धरोहर की अनमोल निधियाँ हैं। वे तुमरी के भी अच्छे गायक हैं पर सार्वजनिक कार्यक्रमों में वे तुमरी नहीं गाते। व्यस्त कार्यक्रम और आमंत्रणों की भरमार के चलते भी वे कतिपय शिष्यों को प्रशिक्षित भी कर रहे हैं। 'सुर संगम' फिल्म में उन्होंने पार्श्व गायन भी किया है। इस फिल्म के सभी गीत शास्त्रीय रागों पर आधारित थे। परन्तु वे अब इस प्रकार के गायन-प्रस्ताव स्वीकार नहीं करते क्योंकि यह अत्यन्त समय साध्य कार्य है।

सुशीला मिश्रा

हिन्दी अनुवाद : ओम प्रकाश दीक्षित

छाया चित्र : राकेश सिन्हा